कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD–24

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2024

एम.एच.डी.–24 : मध्यकालीन कविता—2

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) रहिमन घरिया रहँट की, त्यों आछे की डीठ।
रीतेहि सन्मुख होत है, भरी दिषावै पीठ॥

(ख) प्रीतम आए प्रभात प्रिया-घर, राति रमैं रति-चिन्ह लिए ही;
बैठि रही पलका पर सुंदरि नैन नवायकें, धीर धरें हीं।

बाँह गहैं 'मतिराम' कहैं, न रही रिस मसिनी के
हठ कें ही;
बोली न बोल कछु, सतराम, भौंह चढाय तकी
तिरछोंही॥

(ग) दीरघ दरीनि बसैं, केसवदास केसरी ज्यों,
केसरों को देषि बनकरी ज्यों कंवत हैं।
बासर की सम्पदा उलूक ज्यों न चितवत
चकवा ज्यों चंद चितै चौगुनो चंपत हैं।
केका सुनि ब्याल ज्यों बिलात जात घनस्याम
घननि की घोरनि जवासे ज्यों तपत हैं।
भौंर ज्यों भंवत बन जोगी ज्यों जगत निसि
साकत ज्यों स्याम नाम तेरोई जपत है।

(घ) स्याम सरूप घटा ज्यों, अनुपम नीलपटा तन राधै कै झूमै।
राधे के अंग के रंग रंग्यो पट, वीजुरी ज्यों घन सो
तन भूमै।
है प्रतिमूरति दोऊ, दुहू की, किघौं प्रतिबिम्ब वही
घट दूमैं॥
एकहि देव दुदेह दुदेहरे, देहेर द्वै इक देव दुहू मैं॥

2. राजदरबार के जीवन का रीतिकालीन कविता पर किस प्रकार प्रभाव पड़ा है ? स्पष्ट कीजिए। 10

3. रीतिकाल के नीति कवियों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10

4. रहीम के काव्य में निहित शिल्पगत वैशिष्ट्य पर विचार कीजिए। 10

5. 'केशवदास को कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है।' आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं ? सोदाहरण अपना मत व्यक्त कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

(क) मध्ययुगीनता की अवधारणा

(ख) कविप्रिया

(ग) मतिराम

(घ) जसवंत सिंह